मेरी हिंदी किताब

छठी कक्षा के लिए

(तृतीय भाषा)

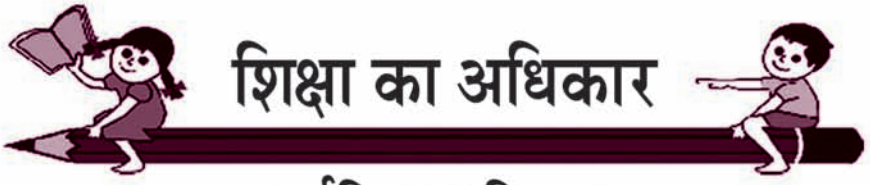

सर्वशिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षक शिक्षा निर्देशालय तथा राज्य शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा प्राथमिक शिक्षा
कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

मेरी हिंदी किताब

छठी कक्षा के लिए
(तृतीय भाषा)

पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष

डॉ. स्मरप्रिया मिश्र

डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्र

डॉ. स्नेहलता दास (प्रभारी)

संयोजना :

डॉ. प्रीतिलता जेना

डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

प्रकाशक :

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,

ओड़िशा सरकार

संस्करण : २०१०

: २०१६

मुद्रण : पाठ्य पुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निर्देशालय तथा

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

ओड़िशा, भुवनेश्वर

ଶିକ୍ଷା ଅଧିକାର

ସର୍ବଶିକ୍ଷା ଅଭିଯାନ

ସଭିଏଁ ପଢ଼ନ୍ତୁ, ସଭିଏଁ ବଢ଼ନ୍ତୁ

ଜଗତମାତାଙ୍କର ଚରଣରେ ଅଦ୍ୟାବଧି ମୁଁ ଯେଉଁ ଯେଉଁ ଭେଟି ଦେଉଅଛି,ସେଗୁଡ଼ିକ ମଧ୍ୟରେ ମୌଳିକ ଶିକ୍ଷା ମୋତେ ସବୁଠାରୁ ଅଧିକ କ୍ରାନ୍ତିକାରୀ ଓ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମନେ ହେଉଛି । ଏହାଠାରୁ ଅଧିକ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଓ ମୂଲ୍ୟବାନ ଭେଟି ମୁଁ ଯେ ଜଗତ ସମ୍ମୁଖରେ ଥୋଇପାରିବି, ତାହା ମୋର ପ୍ରତ୍ୟୟ ହେଉନାହିଁ । ଏଥିରେ ରହିଛି ମୋର ସମଗ୍ର ରଚନାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ପ୍ରୟୋଗାତ୍ମକ କରିବାର ଚାବିକାଠି । ଯେଉଁ ନୂଆ ଦୁନିଆ ପାଇଁ ମୁଁ ଛଟପଟ ହେଉଛି, ତାହା ଏହିଥିରୁ ହିଁ ଉଦ୍ଭବ ହୋଇପାରିବ । ଏହା ମୋର ଅନ୍ତିମ ଅଭିଳାଷ କହିଲେ ଚଳେ ।

ମହାତ୍ମା ଗାନ୍ଧି

ଭାରତର ସମ୍ବିଧାନ

ପ୍ରସ୍ତାବନା

ଆମ୍ଭେ ଭାରତବାସୀ ଭାରତକୁ ଏକ ସାର୍ବଭୌମ, ସମାଜବାଦୀ, ଧର୍ମ ନିରପେକ୍ଷ, ଗଣତାନ୍ତ୍ରିକ ସାଧାରଣତନ୍ତ୍ର ରୂପେ ଗଠନ କରିବା ପାଇଁ ଦୃଢ଼ ସଂକଳ୍ପ ନେଇ ଓ ଏହାର ନାଗରିକଙ୍କୁ

- ସାମାଜିକ, ଅର୍ଥନୈତିକ ଓ ରାଜନୈତିକ ନ୍ୟାୟ ;
- ଚିନ୍ତା, ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି, ପ୍ରତ୍ୟୟ, ଧର୍ମୀୟ ବିଶ୍ୱାସ ଏବଂ ଉପାସନାର ସ୍ୱତନ୍ତ୍ରତା ;
- ସ୍ଥିତି ଓ ସୁବିଧା ସୁଯୋଗର ସମାନତାର ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରଦାନ କରିବାକୁ ତଥା ;
- ବ୍ୟକ୍ତି ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଏବଂ ରାଷ୍ଟ୍ରର ଐକ୍ୟ ଓ ସଂହତି ନିଶ୍ଚିତ କରି ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଭ୍ରାତୃଭାବ ଉତ୍ସାହିତ କରିବାକୁ

ଏହି ୧୯୪୯ ମସିହା ନଭେମ୍ବର ୨୬ ତାରିଖ ଦିନ ଆମର ସଂବିଧାନ ପ୍ରଣୟନ ସଭାରେ ଏତଦ୍ଦ୍ୱାରା ଏହି ସଂବିଧାନକୁ ଗ୍ରହଣ ଓ ପ୍ରଣୟନ କରୁଅଛୁ ଏବଂ ଆମ ନିଜକୁ ଅର୍ପଣ କରୁଅଛୁ।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग।

विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंग।

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष माँगे,

गाहे तव जय गाथा।

जन-गण-मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।

आइए, ऐसा करें :

इस **नए** पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थियों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ–स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थियों द्वारा उस कार्य को करायें। लेखन-शैली बता दें, फिर **लिखवाएँ**। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक **करवाएँ**। लघु निबंध, छोटे-छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्तरों में प्रचलित पत्र आदि पर अभ्यास कराए जाएँ।

दूसरी बात है–भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक अपनी तरफ से भी नयी प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें । इससे बच्चों की रुचि परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण-पल्लवन होता है।

तीसरी बात है- मूल्यांकन-शैली में परिवर्तन। विद्यार्थियों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया **जाए**। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधिक महत्व रखता है। साल में दो-एक परीक्षा के महत्व को कम करके तात्कलिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक संख्या में हों। सबका मूल्यांकन अंतिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठ्यपुस्तक को पहले देख लें, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिक्षा-शैली बनायें। शिक्षक तथा विद्यार्थियों की सक्रियता से भाषा- शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का सांविधानिक कर्तव्य है। यह सारे देश के जन-जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किया **जाए**। क्योंकि ये शिक्षण के सरल और सशक्त साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

तीसरी भाषा हिंदी का प्रारंभ इस पुस्तक से होता है । इसलिए वर्णमाला, गिनती, संयुक्ताक्षर आदि सिखाने की व्यवस्था है। छोटे-छोटे वाक्य बोलने-लिखने में विद्यार्थी सक्षम हो जाएँ, यह इस कक्षा का लक्ष्य है। वे सुनकर भाषा को समझ लें, गाना गा सकें–इस पर ध्यान देना है। शिक्षकों की सहायता से यह कार्य आसानी से पूरा हो सकेगा।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति

विषय - सूची

क्र.नं	विषय	पृष्ठ
1.	ईश- वंदना (कविता)	1
2.	वर्णमाला	2
3.	मात्राएँ	3
4.	देखिए और पढ़िए	4
5.	आइए ऐसे लिखे	5
6.	संयुक्त वर्ण	8
7.	गिनती	10
8.	सप्ताह और साल (चित्र)	11
9.	हमारा देश (कविता)	12
10.	चित्र देखकर बताइए	16
11.	हमारे फल (चित्र)	18
12.	हमारे फूल (चित्र)	19
13.	हमारी सब्जियाँ (चित्र)	20
14.	चूहो ! म्याऊँ सो रही है (कविता)	21
15.	हम क्या-क्या खाते हैं (चित्र)	26

क्र.नं	विषय	पृष्ठ
16.	मैं बड़ा हो रहा हूँ (गद्य)	27
17.	चंदामामा (गद्य)	32
18.	हमारे वाहन (चित्र)	38
19.	वर्षारानी (कविता)	39
20.	वीर सुरेन्द्रसाय (गद्य)	42
21.	हम भी ऐसे खेल खेलते हैं (चित्र)	49
22.	चित्र देखकर कहानियाँ बनाइए (चार कहानियाँ)	50
23.	सच्चा मित्र (गद्य)	51
24.	हमारे पशु (चित्र)	57
25.	हमारे पक्षी (चित्र)	58
26.	रंग कितने	59
27.	कौन-क्या है ?	60
28.	चित्र बनाइए और रंग भरिए	61

ईश-वंदना

जिसने सूरज - चाँद बनाया
जिसने तारों को चमकाया,
जिसने फूलों को महकाया,
जिसने चिड़ियों को चहकाया,

जिसने सारा जगत बनाया,
हम उस ईश्वर के गुण गाएँ,
उसे प्रेम से शीश झुकाएँ ।।

द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	ଋ	ଏ	ଐ	ଓ	ଔ
क	ख	ग	घ	ङ						
କ	ଖ	ଗ	ଘ	ଙ						
च	छ	ज	झ	ञ						
ଚ	ଛ	ଜ	ଝ	ଞ						
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़				
ଟ	ଠ	ଡ	ଢ	ଣ	ଡ଼	ଢ଼				
त	थ	द	ध	न						
ତ	ଥ	ଦ	ଧ	ନ						
प	फ	ब	भ	म						
ପ	ଫ	ବ	ଭ	ମ						
य	र	ल	व							
ୟ	ର	ଲ	ୱ							
श	ष	स	ह							
ଶ	ଷ	ସ	ହ							
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र	ं	ः	ँ				
କ୍ଷ	ତ୍ର	ଜ୍ଞ	ଶ୍ର	ଂ	ଃ	ଁ				

मात्राएँ

आ- ा	का	गा	चा	झा	ता	मा
इ - ि	कि	गि	चि	जि	ति	मि
ई - ी	की	गी	ची	झी	ती	मी
उ - ु	कु	खु	चु	जु	तु	मु
ऊ - ू	कू	खू	चू	जू	तू	मू
कृ - ृ	कृ	खृ	गृ	जृ	तृ	मृ
ए - े	के	खे	गे	चे	ते	मे
ऐ - ै	कै	गै	चै	तै	मै	है
ओ- ो	को	खो	चो	तो	मो	हो
औ- ौ	कौ	खौ	चौ	तौ	मौ	हौ
ं - ं	कं	खं	गं	तं	मं	हं
: - :	क:	ख:	ग:	त:	म:	ह:
ँ - ँ	आँ	एँ	गाँ	हाँ	डँ	फँ

देखिए और पढ़िए

आम, कलम, ऐनक, औरत, ओखली, ऊन, ऋषि, ईश, घर, नमक, मटर, हल, वन, फल, खटमल, सड़क, नहर, चहलपहल, यक्ष, यज्ञ, श्रम, इत्र, गाय, लता, जहाज, इकतारा, अनार, गमला, घड़ा, चरखा, टमाटर, नाम, तालाब, माला, पहाड़, तकिया, मणि, यति, किसान, विष, विहार, लिपि, गिलहरी, हाथी, पगड़ी, मकड़ी, अलमारी, ओखली, घड़ी, छतरी, छड़ी, ढफली, मछली, नदी, डाली, शरीफा, बुढ़िया, मुनि, सुमन, पुल, चुहिया, चूहा, झूला, तरबूज, खरबूजा, झाड़ू, तराजू, बहू, शेर, रेल, करेला, देश, नेवला, केला, भेड़, पेट, ठठेरा, पैसा, मैना, थैला, बैल, मैदान, बैठक, घोड़ा, तोता, कोट, मोर, टोकरी, सरोवर, खरगोश, तौलिया, पकौड़ी, चौका, रौनक, हौसला, पतंग, बंदर, मंदिर, शंख, हंस, वंश, पूँछ, सूँड, पाँव, चाँद, गाँव, साँप, माँ, दु:ख, अत:।

आइए ऐसे लिखें

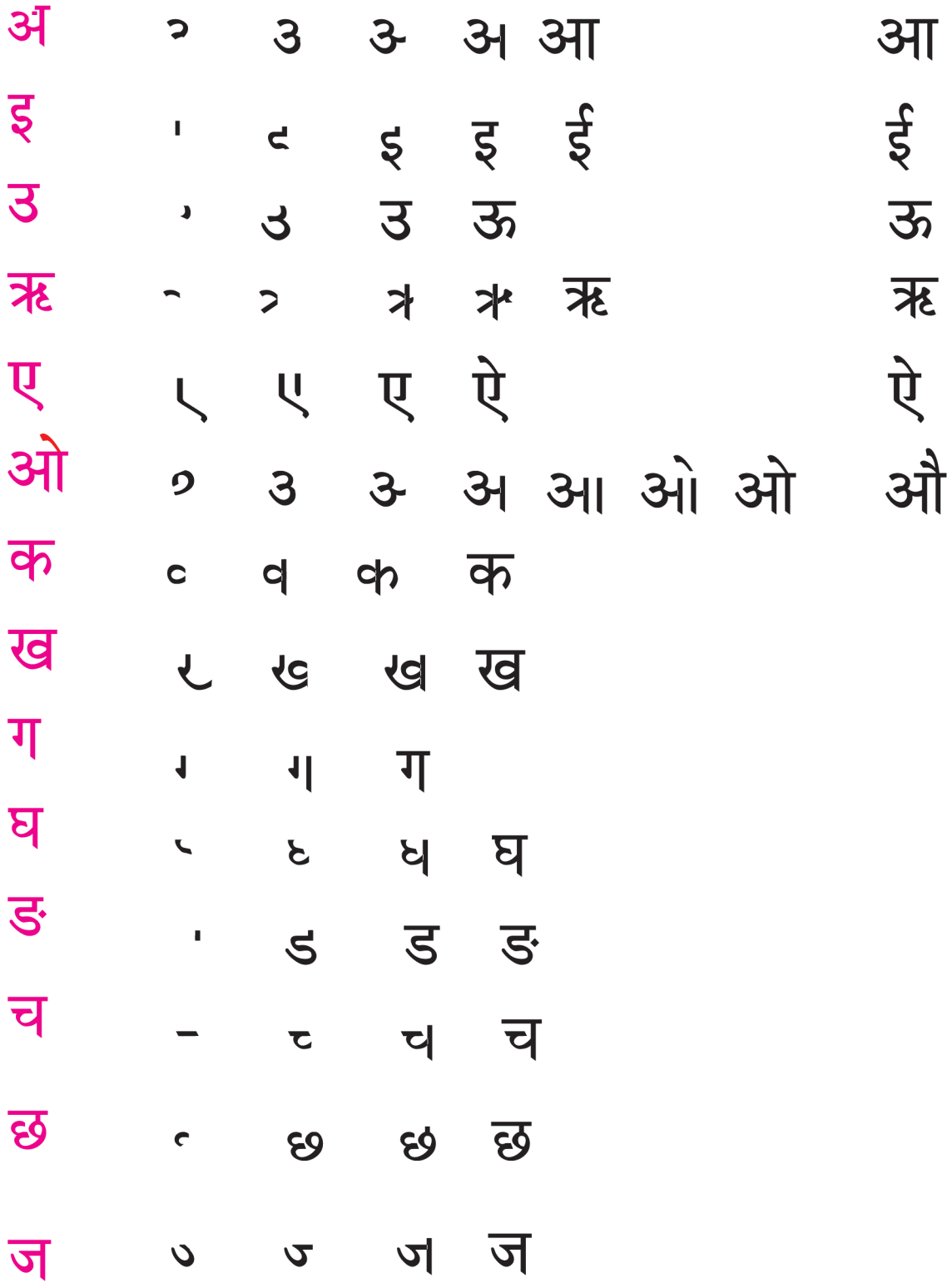

झ — झ झ

ञ — ञ

ट — ट

ठ — ठ

ड — ड ड़

ढ — ढ ढ़

ण — ण

त — त

थ — थ थ

द — द

ध — ध ध

न — न

प — प

फ — फ फ

ब ब

भ भ

म म

य य

र र

ल ल

व व

श श

ष ष

स स

ह ह

क्ष क्ष

त्र त्र

ज्ञ ज्ञ

श्र श्र

संयुक्त वर्ण

क् + ष = क्ष (ক্ষ)	अक्षर	कक्षा	सक्षम
त् + र = त्र (ত্র)	पत्र	मित्र	छात्र
श् + र = श्र (শ্র)	श्रम	श्रवण	श्रमिक
क् + य = क्य (ক্য)	क्या	क्यारी	क्यों
क् + र = क्र (ক্র)	चक्र	वक्र	क्रोध
क् + ल = क्ल (ক্ল)	क्लान्त	क्लेश	क्लिष्ट
क् + व = क्व (ক্ব)	पक्व	क्वाँरा	पक्वान्न
ग् + य = ग्य (গ্য)	भाग्य	योग्य	ग्यारह
ग् + र = ग्र (গ্র)	ग्रहण	ग्राम	ग्राहक
ग् + ल = ग्ल (গ্ল)	ग्लास	ग्लानि	ग्लूकोज
ग् + व = ग्व (গ্ব)	ग्वाला	ग्वालियर	ग्वार
ज् + य = ज्य (জ্য)	राज्य	ज्योति	ज्योतिष
ज् + र = ज्र (জ্র)	वज्र	वज्रपात	वज्राघात
ज् + ञ = ज्ञ (জ্ঞ)	विज्ञ	विज्ञान	यज्ञ
क् + क = क्क (ক্ক)	चक्का	पक्का	सिक्का
च् + च = च्च (চ্চ)	बच्चा	कच्चा	सच्चा
ट् + ट = ट्ट/ट्ट (ট্ট)	पट्टी/ट्टी	मिट्टी/ट्टी	छुट्टी/ट्टी
ड् + ड = ड्ड/ड्ड (ড্ড)	गुड्डा/ड्डा	गुड्डी/ड्डी	कबड्डी/इडी

ष् + ण = ष्ण	(ष्ण)	कृष्ण	विष्णु	सहिष्णु
त् + त = त्त	(त्त)	पत्ता	कुत्ता	सत्ता
न् + न = न्न/न्न	(न्न)	गन्ना/न्ना	मुन्ना/न्ना	तमन्ना/न्ना
प् + प = प्प	(प्प)	गप्प	पिप्पल	कुप्पा
म् + म = म्म	(म्म)	सम्मान	अम्मा	चम्मच
ल् + ल = ल्ल	(ल्ल)	बल्ला	बिल्ली	तिल्ली
स् + त = स्त	(स्त)	मस्तक	हस्त	पुस्तक
प् + य = प्य	(प्य)	प्यार	प्यास	प्याला
द् + ध = द्ध/द्ध	(द्ध)	बुद्धि/द्धि	सिद्धि/द्धि	शुद्ध/द्ध
म् + ब = म्ब	(म्ब)	लम्बा	अम्बा	लुम्बिनी
श् + च = श्च	(श्च)	निश्चय	पश्चिम	आश्चर्य
ल् + ह = ल्ह	(ल्ह)	कुल्हड़	कुल्हाड़ी	अल्हड़
न् + द = न्द	(न्द)	चन्दन	बन्दर	मन्दिर
च् + छ = च्छ	(च्छ)	अच्छा	मच्छर	पुच्छ
ण् + ड = ण्ड	(ण्ड)	अण्डा	गैण्डा	भण्डार
त् + य = त्य	(त्य)	सत्य	नित्य	त्योहार
ब् + द = ब्द	(ब्द)	शब्द	शताब्दी	नि:शब्द
स् + व = स्व	(स्व)	स्वर	स्वभाव	स्वाद
स् + क = स्क	(स्क)	स्कूल	चुस्की	संस्कृत
न् + त = न्त	(न्त)	अन्त	वसन्त	प्रान्त

ऐसे अन्य संयुक्ताक्षर भी सीखें।

गिनती

१. एक
२. दो
३. तीन
४. चार
५. पाँच
६. छह
७. सात
८. आठ
९. नौ
१०. दस
११. ग्यारह
१२. बारह
१३. तेरह
१४. चौदह
१५. पन्द्रह
१६. सोलह
१७. सत्रह
१८. अठारह
१९. उन्नीस
२०. बीस
२१. इक्कीस
२२. बाईस
२३. तेईस
२४. चौबीस
२५. पच्चीस
२६. छब्बीस
२७. सत्ताईस
२८. अठाईस
२९. उनतीस
३०. तीस
३१. इकतीस
३२. बत्तीस
३३. तैंतीस
३४. चौंतीस
३५. पैंतीस
३६. छत्तीस
३७. सैंतीस
३८. अड़तीस
३९. उनतालीस
४०. चालीस
४१. इकतालीस
४२. बयालीस
४३. तैंतालीस
४४. चवालीस
४५. पैंतालीस
४६. छियालीस
४७. सैंतालीस
४८. अड़तालीस
४९. उनचास
५०. पचास
५१. इक्यावन
५२. बावन
५३. तिरपन
५४. चौवन
५५. पचपन
५६. छप्पन
५७. सत्तावन
५८. अट्ठावन
५९. उनसठ
६०. साठ
६१. इकसठ
६२. बासठ
६३. तिरसठ
६४. चौंसठ
६५. पैंसठ
६६. छियासठ
६७. सड़सठ
६८. अड़सठ
६९. उनहत्तर
७०. सत्तर
७१. इकहत्तर
७२. बहत्तर
७३. तिहत्तर
७४. चौहत्तर
७५. पचहत्तर
७६. छिहत्तर
७७. सतहत्तर
७८. अठहत्तर
७९. उन्यासी
८०. अस्सी
८१. इक्यासी
८२. बयासी
८३. तिरासी
८४. चौरासी
८५. पच्चासी
८६. छियासी
८७. सत्तासी
८८. अट्ठासी
८९. नवासी
९०. नब्बे
९१. इक्यानबे
९२. बयानबे
९३. तिरानबे
९४. चौरानबे
९५. पचानबे
९६. छियानबे
९७. सत्तानबे
९८. अट्ठानबे
९९. निन्यानबे
१००. सौ

सप्ताह और साल

सप्ताह में सात दिन होते हैं। जो छूट गया है, उसे लिखिए।

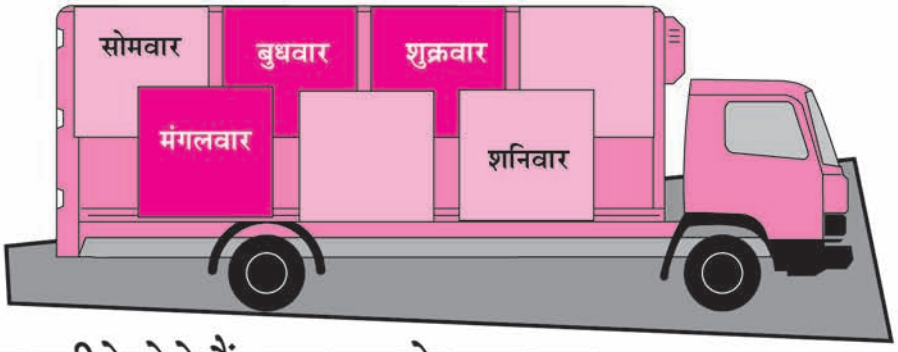

साल में बारह महीने होते हैं। सब एक के बाद एक क्रम में आते हैं। १, २, ३ आदि लिखकर पूरा कीजिए।

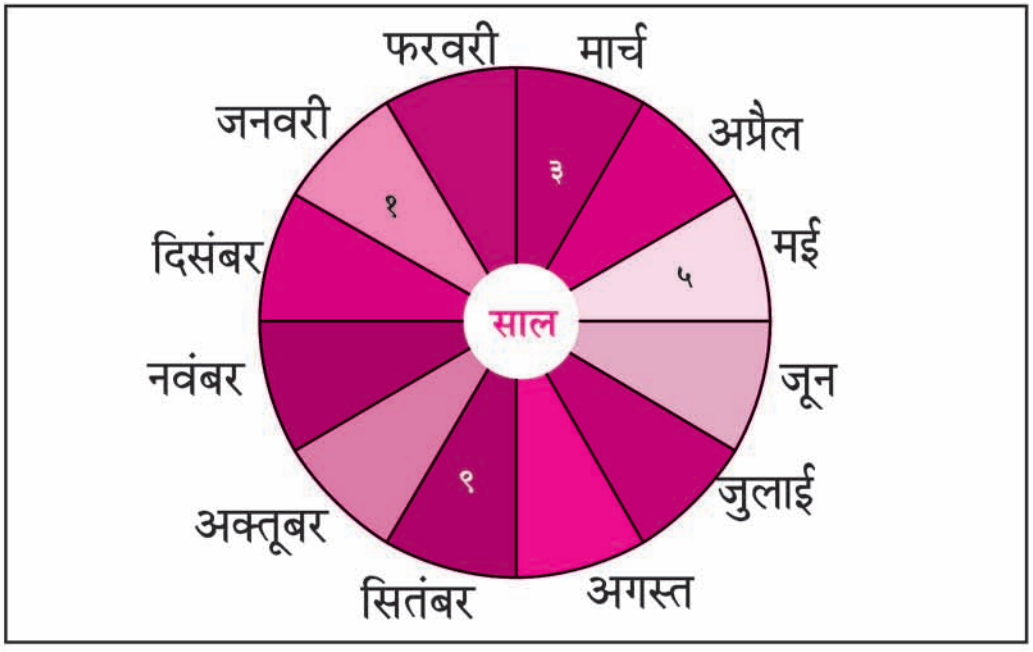

सप्ताह : सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार/बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार/इतवार।

बारह महीने : जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर।

हमारा देश

देश हमारा कितना प्यारा
दुनिया भर में न्यारा है।
ताज हिमालय चरन सागर
कुदरत का यह बसेरा है।

माटी इसकी सोना उगले
रतनों का तो भण्डार है।
हरी-भरी इसकी क्यारियाँ
फल फूलों का आगार है।

बड़ा साहसी हर देशवासी
बलिदान को तैयार है।
खबरदार हर बच्चा-बच्चा
इसका पहरेदार है।

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों के मन में देश-प्रेम की भावना जगाने के लिए कोई देश-प्रेममूलक कविता सुनाएँगे। इसमें निहित भावों को बताकर उनसे कहेंगे कि आज हम इसी प्रकार की एक कविता पढ़ेंगे।

शब्दार्थ:

प्यारा	=	प्रिय
न्यारा	=	स्वतंत्र
ताज	=	मुकुट
कुदरत	=	प्रकृति
उगलना	=	निकलना
बसेरा	=	वास स्थान
आगार	=	घर
पहरेदार	=	चौकीदार

अनुशीलनी

१. इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दीजिए :

क) कौन भारत का मुकुट है ?

ख) कौन भारत के चरण हैं ?

ग) प्रकृति कहाँ निवास करती है ?

घ) हमारा भारत किसका भंडार है ?

ङ) हमारा भारत किसका आगार है ?

२. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क) हमारा देश कैसा है ?

ख) इसकी मिट्टी क्या उगलती है ?

ग) कविता में हिमालय और सागर को क्या कहा गया है ?

घ) हमारे देश के देशवासी कैसे हैं ?

ङ) देश का हर बच्चा क्या करता है ?

३. सही शब्द लगाकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए :

क) दुनिया भर में — — — — है ।

ख) ताज हिमालय चरन — — — — ।

ग) रतनों का यह — — — है ।

घ) — — — इसकी क्यारियाँ ।

ङ) बड़ा — — — — हर देशवासी ।

भाषा-कार्य

४. लिखिए: जैसे -

हिमालय - ह् + इ + म् + आ + ल् + अ + य

प्यारा -प् + य् + आ + र् + आ

माटी -

आगार -

देशवासी -

तैयार -

५. एक जैसे शब्द लिखिए :

प्यारा-न्यारा	सच्चा-बच्चा
सागर-	नीली-
हरी-	गाँव-
गोंद-	पक्का-
कुत्ता-	गन्ना-
रस्सी-	मस्तक-
अचानक-	सेवा-
छाया-	मन-

(भयानक, पुस्तक, लस्सी, मेवा, गागर, तीली, पाँव, तोंद, भरी, मक्का, पत्ता, काया, तन, मुन्ना)

६. शुद्ध रूप लिखिए:

फुल -

वलिदान -

क्यारीयाँ -

बशेरा -

दुनिआ -

आपके लिए काम

- इस कविता को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाइए ।
- इस प्रकार की अन्य कोई देशप्रेम मूलक कविता कक्षा में सस्वर गाकर सुनाइए ।

चित्र देखकर बताइए

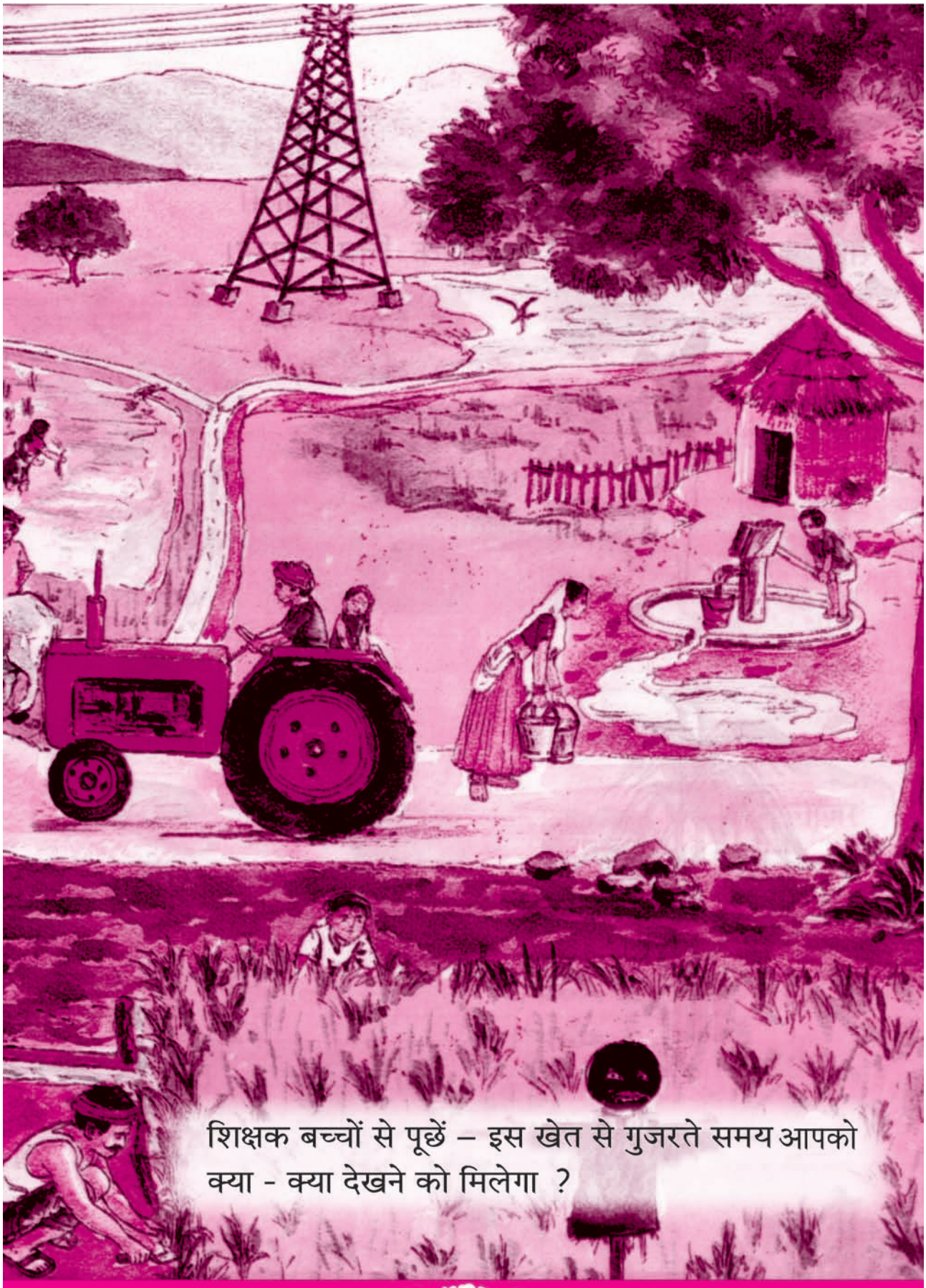

शिक्षक बच्चों से पूछें – इस खेत से गुजरते समय आपको क्या - क्या देखने को मिलेगा ?

हमारे फल

अमरूद अनार अनन्नास आम केला

अंगूर सेव संतरा पपीता तरबूज

लीची चीकू नारियल शरीफा नाशपाती

आलूबुखारा आड़ू चैरी खरबूजा मौसमी

स्ट्रॉबेरी ताड़ खजूर रसभरी कटहल

शिक्षक बच्चों को दूसरे फलों से परिचित कराएँ।

हमारे फूल

कमल मदार गुलाब सूरजमुखी तगर

देवकली गुले मेहंदी हरसिंगार गेंदा बोगन विला

करवीर रजनी गंधा सदाबहार कुंई चमेली

डेलिया गुलबहार सेवती अड़हुल गुलदाउदी

जल कुम्भी जिनिया अपराजिता कॉसमस चंपा

शिक्षक बच्चों को दूसरे फूलों से परिचित कराएँ।

हमारी सब्जियाँ

शिक्षक बच्चों को दूसरी सब्जियों से परिचित कराएँ।

चूहो ! म्याऊँ सो रही है

घर के पीछे,
छत के नीचे,
पाँव पसारे,
पूँछ सँवारे।

देखो कोई,
मौसी सोई,
नासों में से,
साँसों में से।

घर घर घर घर हो रही है,
चूहो ! म्याऊँ सो रही है।

बिल्ली सोई,
खुली रसोई,
भरे पतीले,
चने रसीले।

उलटो मटका,
देकर झटका,

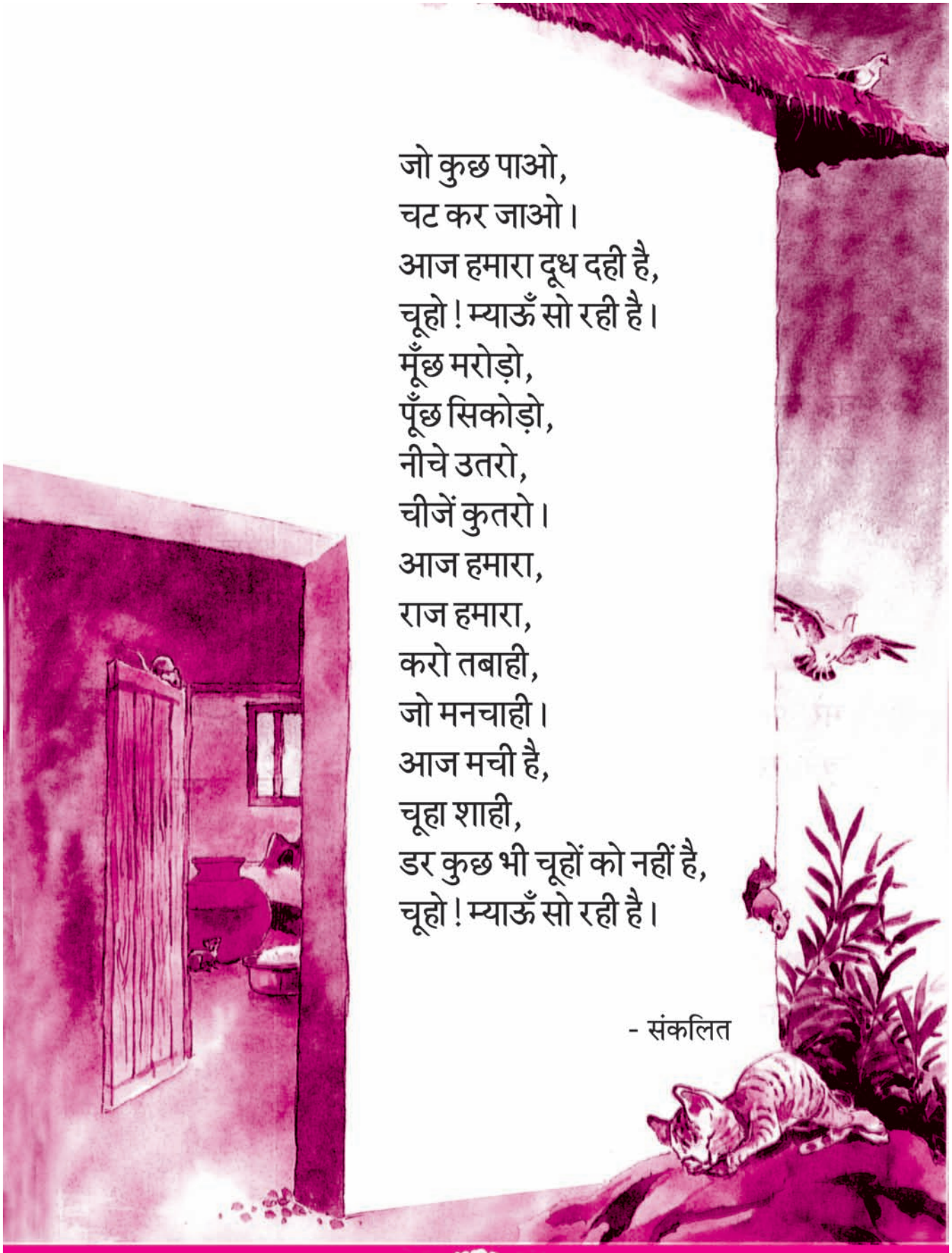

जो कुछ पाओ,
चट कर जाओ।
आज हमारा दूध दही है,
चूहो ! म्याऊँ सो रही है।
मूँछ मरोड़ो,
पूँछ सिकोड़ो,
नीचे उतरो,
चीजें कुतरो।
आज हमारा,
राज हमारा,
करो तबाही,
जो मनचाही।
आज मची है,
चूहा शाही,
डर कुछ भी चूहों को नहीं है,
चूहो ! म्याऊँ सो रही है।

- संकलित

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों को इस प्रकार का एक बाल-गीत सुनाएँगे। छात्र यह कविता सुनकर तालियाँ बजाते हुए सस्वर बोलेंगे। शिक्षक कहेंगे कि आज हम इस प्रकार का एक बाल गीत पढ़ेंगे।

शब्दार्थ:

पसारना	=	फैलाना
सँवारना	=	सजाना, काम सुचारु रूप से करना
पतीला	=	बटलोई
रसीला	=	रस भरा
झटका	=	धक्का
मरोड़ना	=	मोड़ना
सिकोड़ना	=	संकुचित होना
कुतरना	=	दाँत से टुकड़े-टुकड़े करना
शाही	=	राजकीय

अनुशीलनी

१. इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दीजिए :

क) बिल्ली मौसी कैसे सो रही थी ?

ख) चने कैसे थे ?

ग) कौन मटका उलट देंगे ?

घ) क्या करने से मटका उलट जाएगा ?

ङ) चूहों का राज कब चलता है ?

च) चूहों को किससे डर नहीं है ?

छ) मौसी किसे कहा गया है ?

२. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क) बिल्ली मौसी कहाँ सो रही थी ?

ख) पतीले में क्या रखा था ?

ग) बिल्ली के सो जाने पर किसका राज चलता है ?

घ) रसोई में चूहों ने क्यों तबाही मचाई ?

ङ) चूहों को क्यों डर नहीं है ?

३. सही शब्द लगाकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

क) बिल्ली सोई, — रसोई ।

ख) भरे पतीले, — रसीले ।

ग) उलटो —, देकर — ।

घ) नीचे —, चीजें — ।

ङ) आच मची है — — ।

भाषा - कार्य

४. एक जैसे शब्द लिखिए:

जैसे- नीचे- ऊँचे

रसीले-

झटका-

कुतरो-

मरोड़ो-

पसारे-

रसोई-

जाओ-

शाही-

मूँछ-

५. इन शब्दों से वाक्य बनाइए :

तबाही, चीज, मूँछ, पाँव, पूँछ, रसीले,

पतीले, चूहा, शाही, दूध, दही ।

६. कर्ता : क्रिया देखकर इनको मिलाइए :

जैसे: राम जाता है ।

सीता जाती है ।

चूहा	सो रहा है ।
बिल्ली	सो रही है ।
कुत्ता	दौड़ रहा है ।
चिड़िया	उड़ रहा है ।
श्याम	खेलता है ।
रानी	खाती है ।

आपके लिए काम:

रसोई में आपकी माँ जो- जो खाने की चीजें बनाती हैं, उनकी एक तालिका बनाइए ।

हम क्या - क्या खाते हैं

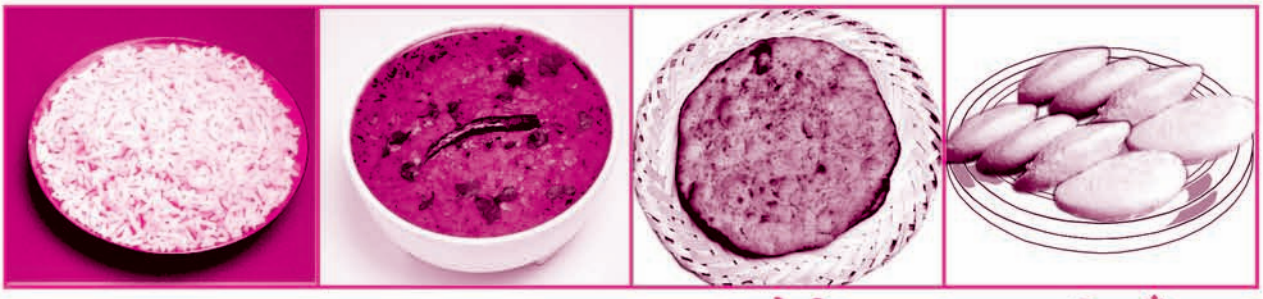

चावल दाल रोटी इडलियाँ

आलूसब्जी जलेबियाँ लड्डू दहीबड़े

समोसे बड़े गुलाबजामुन रसगुल्ले

खीर बरफी गोलगप्पे पुड़ी

शिक्षक बच्चों को दूसरी भोजन-सामग्री से परिचित कराएँ।

मैं बड़ा हो रहा हूँ

आकाश में काले-काले बादल घिर आए थे। बूँदें गिरने लगी थीं, माली माँ से कह रहा था– माँ जी, अच्छी बारिश हो रही है, इस बार पौधे जल्दी बड़े हो जाएँगे। कुछ नए पौधे भी लगाऊँगा।

वरुण ने माली काका की बात सुनी। वह भी जल्दी से बड़ा होना चाहता था– बड़े भैया की तरह। अपने पिताजी की तरह।

बाहर तेज वर्षा होने लगी थी। वरुण चुपके से बाहर निकल गया। बारिश में भीगने लगा। वह मन ही मन सोच रहा था–अब मैं जल्दी ही बड़ा हो जाऊँगा–बड़े भैया जैसा। पिताजी जैसा।

अचानक माँ ने खिड़की से झाँका। अरे! यह वरुण वहाँ क्या कर रहा है ? कितना भीग गया है!

''वरुण! वरुण! जल्दी भीतर आओ। बाहर क्यों भीग रहे हो? भीतर आओ।''

''नहीं माँ, मैं भी बड़ा होना चाहता हूँ। देखो, मैं बड़ा हो रहा हूँ। इन पेड़-पौधों की तरह मैं भी बड़ा हो रहा हूँ,'' वरुण ने उत्तर दिया।

मुस्कुराते हुए माँ बाहर आई । वरुण का हाथ पकड़कर अंदर ले गई। कपड़े बदले। बालों को तौलिए से सुखाते हुए बोली– अरे, वर्षा से पेड़-पौधे बढ़ते हैं। तुम्हें बड़ा होना है तो अच्छी तरह खाओ, पीओ। दाल, रोटी, फल-सब्जी, दूध-दही, अंडे–सब कुछ। फलों का रस भी पीओ। खूब खेलो, क्योंकि खेलना भी बहुत जरूरी है।

सरदी आ गई। माँ ऊनी कपड़ों को धूप में डाल रही थी। वरुण ने अपना स्वैटर उठाया। पहनने लगा। स्वैटर बड़ी मुश्किल से पहना गया। वरुण को वह बहुत छोटा लगा।

बोला–माँ, यह मेरा स्वैटर है न! कितना छोटा हो गया है!

माँ हँसकर बोली– स्वैटर छोटा नहीं हुआ, तुम बड़े हो गये हो।

- संकलित

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों से पूछें कि क्या चार साल पहले की कमीज वे अभी पहन पाते हैं ? उनके उत्तर के आधार पर शिक्षक छात्रों को बताएँगे कि वे धीरे-धीरे बड़े हो जाने के कारण पुरानी कमीजें पहन नहीं पाते । इससे संबंधित एक कहानी आज हम पढ़ेंगे।

शब्दार्थ:

बूँद	=	बिन्दु
बारिश	=	वर्षा
भीगना	=	पानी से तर हो जाना
अंदर	=	भीतर
मुश्किल	=	कठिन

अनुशीलनी

१. इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दीजिए

क) आकाश में क्या घिर आए थे ?

ख) किसने माली काका की बात सुनी ?

ग) कौन चुपके से बाहर निकल गया ?

घ) किसने खिडकी से झाँका ?

ङ) वरुण ने क्या उठाया ?

२. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए

क) वरुण बारिश में क्यों भीग रहा था ?

ख) माँ ने वरुण से क्या कहा ?

ग) बरुण को अंदर ले जाकर माँ ने क्या किया ?

घ) पेड़-पौधे कैसे बड़े होते हैं ?

ङ) बच्चे कैसे बड़े होते हैं ?

३. सही शब्द लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क) तुम्हें — होना है तो अच्छी तरह खाओ — ।

ख) दाल, रोटी, फल- सब्जी, दूध, दही, अंडे — ।

ग) फलों का — भी पीओ ।

घ) खूब — क्योंकि खेलना भी बहुत — है।

ङ) माँ, यह मेरा — है न !

भाषा - कार्य

४. कोष्ठक में दिए गए सही शब्दों के आधार पर इनके अर्थ लिखिए:

वर्षा	जल्दी
ऊनी	बादल
उत्तर	अचानक
भीतर	जरूरी
तेज	मुश्किल

(जवाब, पशमी, जोर से, एकाएक, कठिन, मेघ, अंदर, बारिश, शीघ्र, आवश्यक)

५. लिखिए और पढ़िए :

छोटा, उत्तर, बाहर, बढ़ना, भीगना, मुश्किल, जल्दी, अच्छी, गिरना, पकड़ना

६. लिखिए:

जैसे : भैया = भ् + ऐ + य् + आ

जल्दी = ज् + अ + ल् + द् + ई

बारिश

आकाश

पौधे

बादल

चुपके

जैसा

वरुण

उत्तर

७. कोष्ठक में से विभक्ति-चिह्न चुनकर नीचे लिखे वाक्यों की खाली जगहों को भरिए :
(से, में, का, की, को)

क) वरुण ने माली काका — बात सुनी।

ख) वरुण चुपके — बाहर निकल गया ।

ग) माँ बालों — सुखाते हुए बोली ।

घ) माँ वरुण — हाथ पकड़कर ले गई ।

ङ) माँ ऊनी कपड़े धूप — डाल रही थी ।

चंदामामा

चन्द्रकान्त नाम का एक बच्चा था, वह चाँदपुर गाँव में रहता था। उस गाँव की पूर्व दिशा में एक पहाड़ है। उसके नीचे एक नदी बहती है। चन्द्रकान्त बड़े सबेरे उठता था। वह रोज देखता कि एक लाल रंग का गोला पहाड़ पर बैठा है और फिर रात को एक चाँदी की थाली पहाड़ की चोटी से ऊपर उठती। चन्द्रकान्त को गोद में लेकर माँ चंदामामा को बुलाती–

चन्दामामा दूर के, पूए पकाए पूर के ।
आप खाए थाली में, मुन्ने को दिये प्याली में ।
चन्द्रकांन्त बहुत खुश होता, वह माँ से कहता, माँ मैं चाँद पर जाऊँगा ।

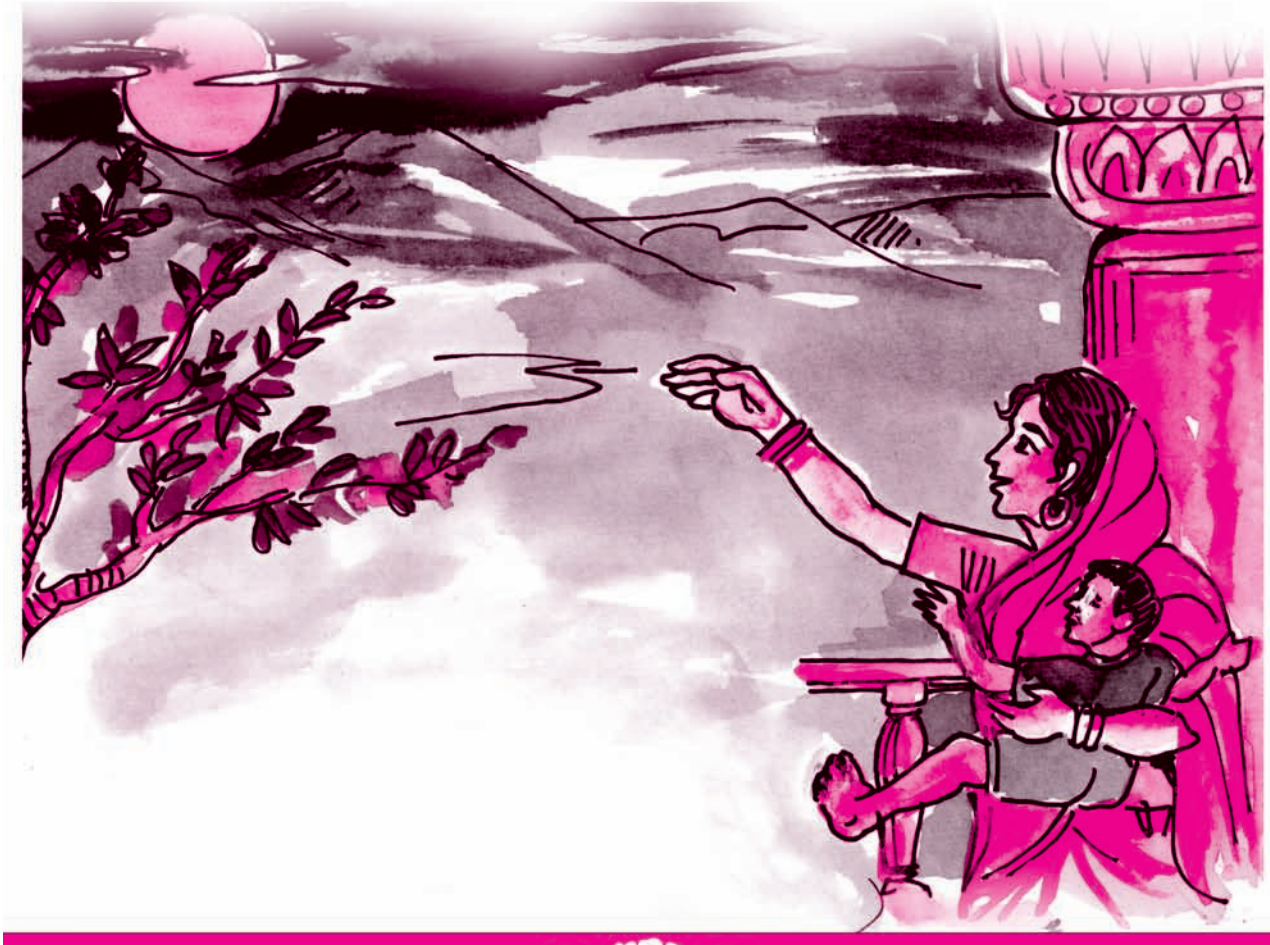

बच्चा बड़ा हुआ। उसने खूब पढ़ाई की। विज्ञान पढ़कर चन्द्रकान्त वैज्ञानिक बन गया। वह दूरबीन से चाँद को देखता तो बहुत खुश होता। वह और उसके साथी वैज्ञानिकों ने मिलकर आकाश में राकेट चलाते, महाकाश में उपग्रह भेजते। चन्द्रकान्त भारत का वैज्ञानिक था। उसे मालूम हुआ कि अमेरीका के तीन वैज्ञानिक चाँद पर गये हैं। वे चाँद पर उतरे। वहाँ चहलकदमी की। फिर पृथ्वी पर लौट आए। चन्द्रकान्त सोचने लगा– मैं भारत का वैज्ञानिक हूँ। मेरे पास साज सामान कम हैं, तो क्या हुआ ? मैं भी एक दिन चाँद पर जाऊँगा।

कुछ दिन बाद सचमुच भारत के वैज्ञानिकों ने 'चन्द्रयान' नामक एक यान को चाँद पर भेजा। चन्द्रकान्त उनके साथ शामिल था। वह और उसके साथियों ने मिल कर चाँद पर 'चन्द्रयान' को पहुँचाया। उससे चाँद की बहुत सी जानकारी हासिल की। दुनिया के लोगों ने चन्द्रकान्त की बड़ी तारीफ की।

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों से पूछेंगे- आप भविष्य में क्या बनना चाहते हैं ? और क्यों? उनके उत्तरों के आधार पर शिक्षक बोलेंगे कि सब बड़े होकर अच्छे काम करना चाहते हैं । ऐसे बालक चन्द्रकान्त भी भविष्य में वैज्ञानिक बनकर सभी का प्रिय बन गया । आज उसके बारे में पढ़ेंगे ।

शब्दार्थ:

चोटी	=	शिखर
दूरबीन	=	दूर की वस्तुएँ दिखाई पड़ने वाला यंत्र
चहलकदमी	=	टहलना, घूमना, चलना
सामान	=	चीज
शामिल	=	साथ मिल जाना
तारीफ	=	प्रशंसा

अनुशीलनी

१. इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दीजिए :

क) बच्चे का नाम क्या था ?

ख) गाँव का नाम क्या था ?

ग) माँ किसको बुलाती थी ?

घ) विज्ञान पढ़कर चन्द्रकान्त क्या बन गया ?

ङ) अमेरीका के कितने वैज्ञानिक चाँद पर गए थे?

च) किसने चन्द्रकान्त की तारीफ की ?

२. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क) चाँदपुर गाँव में पहाड़ कहाँ है ?

ख) वह बड़ा होकर क्या बना ?

ग) चन्द्रकान्त चाँद को किससे देखता था ?

घ) वैज्ञानिकों ने कौन-सा यान चाँद पर भेजा ?

ङ) किस देश के तीन वैज्ञानिक चाँद पर गए थे?

३. शून्य स्थान भरिए :

क) गाँव की — देश में एक पहाड़ है ।

ख) मुन्ने को दिया — में ।

ग) — के वैज्ञानिक चान्द पर गए थे ।

घ) भारत ने — नामक एक यान चाँद पर भेजा ।

भाषा - कार्य

४. इन शब्दों से वाक्य बनाइए:

देखना, गाना, भेजना, हासिल, तारीफ, साज-सामान, दूरबीन, वैज्ञानिक ।

५. इनके विलोम शब्द लिखिए :

छोटा	खुला
गंदा	बहुत
अच्छा	गरम
पतला	अपना
आगे	नया

६. इन शब्दों के समान अर्थवाले दूसरे शब्द कोष्ठक में से चुनकर लिखिए

चाँद	साथी
बच्चा	जानकारी
माँ	हासिल
पृथ्वी	तारीफ

(दोस्त, प्रशंसा, चन्द्रमा, प्राप्त, माता, परिचय, शिशु, धरती)

७. पढ़िए, समझिए और लिखिए:

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे	लता	लताएँ	नदी	नदियाँ
कुत्ता		माता		देवी	
बकरा		माला		प्याली	
लड़का		बाला		बकरी	
सच्चा		शाखा		लड़की	
बात	बातें	बाघ	बाध	बहू	बहुएँ
पुस्तक		आम		जूँ	
किताब		साधु		झाड़ू	
रात		शेर		ऋतु	ऋतुएँ
आँख		भालू		वस्तु	
छत		आदमी		धेनु	

(अन्य शब्दों के वचन बदलना सीखिए।)

८. अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु लगाकर दस जोड़े शब्द बनाइए :

चंदा	चाँद
हंस	हँस
बंधन	बाँधना
कंस	काँसा
फंदा	फँदाना

९. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर खाली जगहें भरिए :

(डॉक्टर, कुम्हार, खिलाड़ी, किसान, चित्रकार, बढ़ई, इंजिनीयर, पायलट, माली)

— जैसे — जो विज्ञान पर काम करता है वह- वैज्ञानिक

जो इलाज करता है वह _____

जो खेती करता है वह _____

जो चित्र बनाता है वह _____

जो घर, पुल, बाँध आदि बनाता है वह _____

जो लकड़ी की चीजें बनाता है वह _____

जो हवाई जहाज उड़ाता है वह _____

जो बगीचे की देखभाल करता है वह _____

जो मिट्टी के बर्तन बनाता है वह _____

जो खेलता है वह _____

आपके लिए काम:

वैज्ञानिक बनने के लिए आपको क्या करना होगा ?

इसकी एक सूची बनाइए ।

हमारे वाहन

साइकिल

मोटर कार

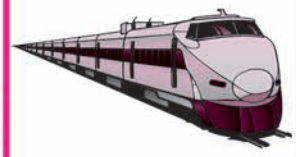

रेलगाड़ी

बस

बैलगाड़ी

स्कूटर

तांगा

जीप

मोटर साइकिल

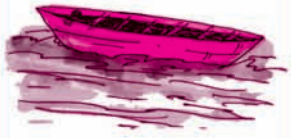

नाव

हवाई जहाज

जहाज

हेलीकैप्टर

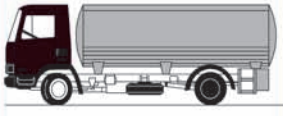

टैंकर

ऑटोरिक्शा

रिक्शा

शिक्षक बच्चों को दूसरे वाहनों से परिचित कराएँ।

वर्षारानी

आई वर्षारानी आई
वर्षारानी आई
देखो देखो आसमान में
कितनी बदली छायी।
ठंडी ठंडी हवा की लहरें
लगतीं कितनी प्यारी
भर देती हैं तन में सिहरन
मन में उमंग निराली।
नन्ही नन्ही बूँदें झरतीं
झरतीं कभी फुहारें
कभी टपाटप, कभी झमाझम
चलती रहीं हिलोरें।
गड़ गड़ गड़ गड़ बजे नगाड़े
तड़ तड़ नाचे बादल
चमचम चमकी बिजली साजे
आतशबाजी हुनर।
आओ आओ हम सब बच्चे
नाचें गाएँ मिलकर
आई वर्षारानी आई
स्वागत करें सब चलकर।

शिक्षक के लिए :

शिक्षक वर्षा पर आधारित कोई गीत सुनाएँगे । छात्र-छात्राएँ ताली बजाकर उसे सस्वर गाएँगे । अब कविता का भाव बताकर शिक्षक छात्रों से कहेंगे कि आज हम वर्षा पर एक कविता पढ़ेंगे ।

शब्दार्थ:

आसमान	=	आकाश
लहर	=	तरंग
तन	=	शरीर
सिहरन	=	रोमांच
उमंग	=	उत्साह
निराली	=	अजीब
नन्ही	=	छोटी
फुहारें	=	नन्ही-नन्ही बुँदों की झड़ी
हिलोरें	=	तरंगें
नगाड़ा	=	एक प्रकार का बाजा
हुनर	=	कला

अनुशीलनी

१. इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दीजिए :

क) कौन आई ?

ख) बदली कहाँ छा जाती है ?

ग) हवा तन में क्या भर देती है ?

घ) बूँदें कैसी हैं ?

ङ) बादल कैसे नाचते हैं ?

२. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क) आसमान में क्या छा जाती है ?

ख) हवा कैसी लगती है ?

ग) बादल कैसे शब्द करते है ?

घ) बिजली कैसे चमकती है ?

ङ) वर्षा होने पर बच्चे क्या करते हैं ?

३. सही शब्दों से वाक्यों को भरिए :

क) गड़ गड़ गड़ गड़ बजे —

ख) देखो देखो आसमान में कितनी — छायी ।

ग) भर देती हैं तन में —

घ) मन में — निराली

ङ) कभी टपाटप, कभी —

४. क्रिया पद जोड़कर ऐसे दस वाक्य लिखिए :

जैसे-	वर्षा होती है ।	मेघ गरजता है ।
	गाय	सूरज
	मछली	चाँद
	हवा	आदमी
	बिजली	नगाड़े

आपके लिए काम

(अध्यापक बच्चों को कर्ता-क्रिया के संबंध को उदाहरण द्वारा सिखाएँ । यह भी बताएँ कि प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग जानना जरूरी है ।)

वीर सुरेन्द्रसाय

बहुत दिनों की बात है। संबलपुर के पास एक गाँव है खिंडा। वहाँ राजघराने के कुछ लोग रहते थे। उनके बच्चे बड़े साहसी थे। खेल-खेल में समरकला सीख लेते थे। वे तलवार, भाला, धनुष-बाण आदि अच्छी तरह चला लेते थे। वे सबके सब समरकला में कुशल थे। उनमें से एक लड़का बड़ा ही होनहार था। सभी लड़के उससे बहुत प्रेम करते थे। उसको अपना नेता मानते थे। उसका निशाना सबसे तेज और अचूक होता था। एक बच्चे ने उससे पूछा- ''सुरेन चच्चा! तुम्हारे बाण बड़े तेज हैं। लेकिन क्या होगा? तुम जिन अत्याचारी गोरी पलटन से लड़ना चाहते हो उनके पास तोप और बंदूकें हैं। उनकी तोप और बंदूकें मीलों तक आग उगलती हैं। ऐसे में तुम्हारे ये बाण क्या काम आएँगे ?''

यह लड़का था सुरेन्द्रसाय। उसने अपने भतीजे से कहा, ''हमारे बाण तोपों से भी तेज हैं, क्योंकि तोप की आग को पैदा करती है काली बारूद, वह जलकर बूझ जाती है। मगर हमारे दिलों में प्रेम की उज्ज्वल आग है। वह हमारे

बाणों के फलकों में बैठकर दुश्मनों को जला देगी। वह कभी बुझेगी नहीं। कभी नहीं। तुम लोग मेरे साथ रहो तो हम सब मिलकर अंग्रेजों को हमारी मिट्टी से भगा देंगे। बच्चे बड़े हुए। तब एक बड़ी घटना घटी। संबलपुर के राजा के कोई बेटा नहीं था । अंग्रेज शासकों ने उनका पोष्यपुत्र ग्रहण करने का अधिकार छीन लिया।

उन्होंने किसी दूसरे को राजा बनाना चाहा। सुरेन्द्रसाय राजघराने के निकट संबंधी थे। लेकिन अंग्रेजों ने किसी दूसरे को राजा बनाया । क्योंकि वे उस राजा के जरिए अपना कब्जा जमाना चाहते थे। धीरे-धीरे उनका अत्याचार बढ़ा। लोग बड़े परेशान थे। उन्होंने सुरेन्द्र से कुछ करने को कहा। सुरेन्द्र ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा बनाया। गाँव-गाँव में घूमकर लड़ाकू जवानों को एकजुट किया और जहाँ-तहाँ अंग्रेजों से मुकाबला करना शुरू कर दिया। लोगों ने उनका भरपूर साथ दिया। सुरेन्द्रसाय अंग्रेजों की छाती पर मूँग दलने लगे। अंग्रेजों ने अपनी फौज की ताकत बढ़ा दी। अंग्रेज पलटन की कई कंपनियाँ संबलपुर आईं। लोकिन सुरेन्द्र के साथी अपूर्व वीरता के साथ लड़ते रहे। अंग्रेज उन्हें हराने में नाकामयाब रहे। फिर उन्होंने कपट का रास्ता अपनाया और सुरेन्द्रसाय को गिरफ्तार कर लिया। वे जेल भेज दिये गये। सुरेन्द्र तीन साल बाद जेल से छूटे। लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें फिर पकड़ लिया क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं सुरेन्द्र जनता को अपने साथ लेकर फिर से आंदोलन छेड़ दें तो

क्या होगा ? इसलिए उन्हें फिर से जेल भेज दिया गया। वे जेल में अठारह साल रहे। ऐसे देशप्रेमी वीर का जेल में निधन हो गया।

भारत वर्ष के जिन वीरों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई की, उनमें सुरेन्द्रसाय अगुवा थे। यह जानकर कि अंग्रेजों के पास गोले-बारूद का बड़ा भंडार है, ये वीर डरते नहीं थे।

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों को देश की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से पहले की स्थिति तथा लार्ड डलहौजी के कानून के बारे में बताएँगे, जिससे दत्तक पुत्र ग्रहण करने वाले राजा अपने राज्य पर अधिकार खो बैठते थे । शिक्षक प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के समय सशस्त्र लड़ाई में भाग लेनेवाले कुछ देशप्रेमियों के कार्यों का उल्लेख करके उनका ध्यान वीर सुरेन्द्रसाय की ओर आकर्षित करेंगे ।

शब्दार्थ:

समर-कला	=	युद्ध-कला
होनहार	=	बुद्धिमान
निशाना	=	लक्ष्य
पलटन	=	बाहर निकलना
उगलना	=	सेना
दुश्मन	=	शत्रु
राजघराना	=	राजवंश
खिलाफ	=	विरुद्ध
लड़ाकू	=	लड़नेवाला
मुकाबला	=	सामना
फौज	=	सैनिक
गिरफ्तार	=	बन्दी
निधन	=	मृत्यु
हुकूमत	=	शासन

अनुशीलनी

१. इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दीजिए :

क) होनहार लड़के का नाम क्या था ?

ख) सुरेन्द्र के बाण कैसे थे ?

ग) किसके कोई बेटा नहीं था ?

घ) सुरेन्द्र ने अंग्रेजों के खिलाफ क्या बनाया ?

ङ) सुरेन्द्र अंत में कितने साल जेल में रहे ?

च) सुरेन्द्र की कहाँ मृत्यु हुई ?

२. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क) सुरेन्द्रसाय कहाँ के रहनेवाले थे ?

ख) वे किस घराने के निकट संबंधी थे ?

ग) सुरेन्द्र का निशाना कैसा था ?

घ) अंग्रेज सरकार कैसी थी ?

ङ) सुरेन्द्रसाय को अंग्रेजों ने कैसे पकड़ा ?

३. नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों को भरिए :

क) — के पास एक गाँव है खिंडा ।
(बलांगीर, सुन्दरगड़, संबलपुर)

ख) अंग्रेजों ने — का रास्ता अपनाकर सुरेन्द्रसाय को गिरफ्तार कर लिया । (अहिंसा, संधि, कपट)

ग) सुरेन्द्रसाय जेल में कुल — साल रहे ।
(१८, ८, २८)

भाषा - कार्य

४. इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

समर	उज्ज्वल
कला	फलक
होनहार	संबंधी
निशाना	पोष्यपुत्र
अत्याचारी	मोर्चा

(उजला, कौशल, युद्ध, गोद लिया हुआ पुत्र, सेना, रिश्तेदार, लक्ष्य, अन्यायी, नोक, बुद्धिमान)

५. इन शब्दों से वाक्य बनाइए :

पलटन, अपूर्व, देहांत, कपट, गिरफ्तार, लड़ाई, अत्याचार, अधिकार, संबंधी, खिलाफ ।

६. पढ़िए और लिखिए :

तलवार, भाला, धनुष-बाण, तोप, बारूद, बर्छा, बंदूक

७. विलोम शब्द लिखिए:

जैसे - कुशल - अकुशल

शिक्षित-	दिन-
नीति-	उजाला-
प्रेम-	निकट-
गोरी-	दुश्मन-

८. 'क' स्तंभ के शब्दों के साथ 'ख' स्तंभ के उपयुक्त शब्द जोड़िए:

'क'	'ख'
होनहार	साहसी
काली	जवान
अपूर्व	पलटन
बड़े	बारूद
उज्ज्वल	वीरता
अचूक	लड़का
गोरी	आग
लड़ाकू	निशाना

हम भी ऐसे खेल खेलते हैं

हॉकी फुट बॉल दौड़ योगासन व्यायाम

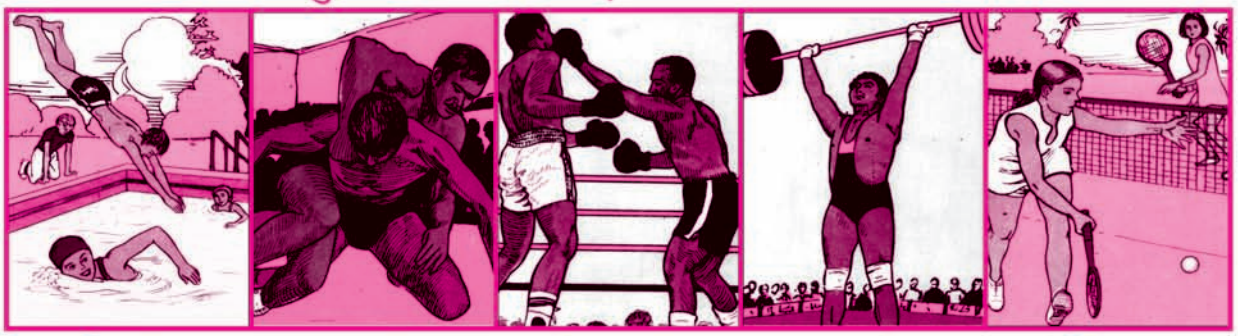

तैराकी कुश्ती मुक्के बाजी भार-उत्तोलन टैनिस

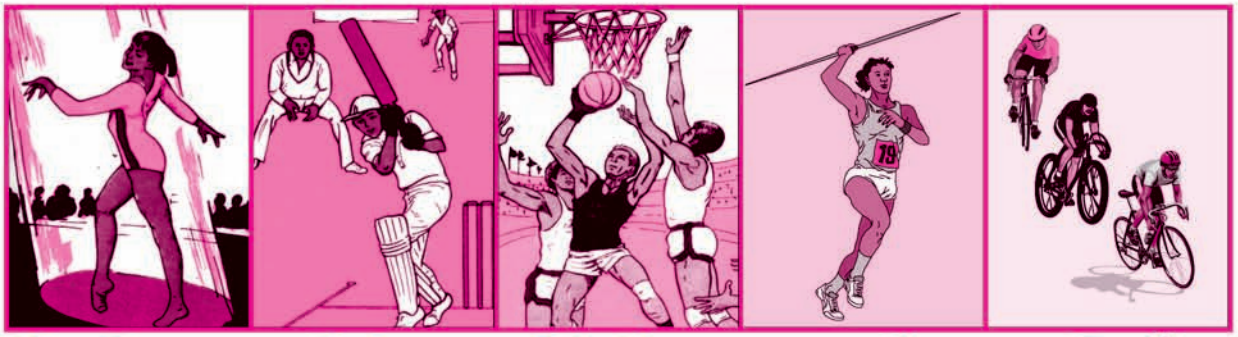

जिम्नास्टिक्स क्रिकेट बॉस्केटबॉल भाला-फेंक साइकिल दौड़

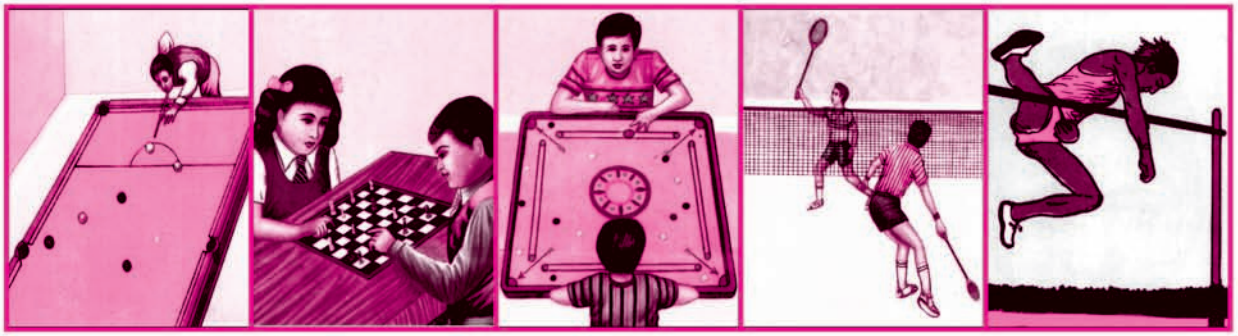

बिलयर्ड शतरंज कैरम बैडमिन्टन ऊँची छलाँग

शिक्षक बच्चों को दूसरे खेलों से परिचित कराएँ।

चित्र देखकर कहानियाँ बनाइए

कुछ प्रसिद्ध कहानियों के चित्र नीचे दिए गए हैं। इनके नाम हैं–चतुर कौआ, चालाक खरगोश और बातूनी कछुआ, एकता में बल है , सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी, लोभी कुत्ता। चित्रों के क्रम से कहानियों के नाम लिखिए।

आप आपने मन से कोई कहानी सुनाइए ।

सच्चा मित्र

एक छोटा सा गाँव था। उसका नाम लखनपुर था। उसके पास एक छोटा जंगल भी था। वहाँ एक कौआ रहता था, एक हिरन भी था। दिन भर वे इधर उधर भटकते थे। शाम को दोनों एक पेड़ के पास आ जाते थे। कौआ डाली पर बैठ जाता और हिरन पेड़ के नीचे आराम करता था।

एक दिन हिरन मैदान में हरी-हरी घास चर रहा था । वह बहुत सुंदर दीखता था। सोना जैसा चमकीला शरीर, उस पर गोल गोल सफेद निशान–धूप में वे सब चमकते थे। इतने में वहाँ कहीं से एक सियार आ पहुँचा। उसने हिरन को देखा। वह सोचने लगा– वाह! कितनी मुलायम इसकी देह है। इसका मांस कोमल और सरस है। यह मर जाए तो इससे मुझे बढ़िया खाना मिलेगा।

सियार ने एक तरकीब सोची। वह हिरन के पास गया और बोला– ''मित्र! मैं इसी जंगल में रहता हूँ। मेरा नाम शोभन है। मैंने पास में एक हरा भरा खेत देखा है। तुम मेरे साथ आओ। वहाँ भरपेट अनाज खाने को मिलेगा।'' सियार की बात मानकर हिरन उसके साथ गया। वह खुशी से अनाज खाने लगा।

दूसरे दिन खेत के मालिक ने उसे पकड़ने के लिए एक जाल बिछाया। हिरन उसमें फँस गया। उसने देखा सियार पास में खड़ा है। उसने कहा, ''मित्र! मेरी मदद करो। मुझे जाल से छुड़ाओ।'' लेकिन सियार बड़ा चालाक था। उसने हिरन की बात अनसुनी कर दी।

उधर कौआ हिरन का इतंजार कर रहा था। अंधेरा हो आया था। उसने सोचा,– मेरा मित्र कहीं आफत में पड़ गया है। वह उसे ढूँढ़ने चला। जल्दी ही हिरन उसे दीख गया। कौआ हिरन के कंधे पर बैठ गया। उससे सारी बातें सुन ली। उसने हिरन से कहा, ''मित्र! तुम चुपचाप मुर्दे की तरह पड़े रहो। जब मालिक तुम्हें मरा हुआ समझकर अपना जाल खोलेगा तब मैं काँव-काँव की आवाज करूँगा। तुम फौरन उठकर भाग जाना।''

आखिर वैसा ही हुआ। कौआ अपने मित्र को आफत से बचाने में सफल हुआ। वह कौआ हिरन का सच्चा मित्र था।

शिक्षक के लिए :

शिक्षक पशु-पक्षियों की कहानियों में से कोई कहानी छात्रों को सुनाएँगे, जिसमें यह संदेश होगा कि चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले धूर्त होते हैं और विपत्ति के समय सहायता पहुँचाने वाले सच्चे मित्र होते हैं । छात्रों में सहायता करने की वृत्ति जगाकर और इस कार्य की सराहना करके शिक्षक विषय पर आएँगे ।

शब्दार्थ:

आवाज	=	शोर
चमकीला	=	उज्ज्वल
मुलायम	=	कोमल
तरकीब	=	उपाय
अनाज	=	शस्य
मदद	=	सहायता
अनसुनी	=	न सुनना
इंतजार	=	प्रतीक्षा
आफत	=	विपत्ति
फौरन	=	तुरंत / जल्दी
आखिर	=	अंत में

अनुशीलनी

१. इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दीजिऐ :

क) गाँव का नाम क्या था ?

ख) शाम को दोनों कहाँ आ जाते थे ?

ग) किसने जाल बिछाया ?

घ) सियार कैसा था ?

ङ) कौआ कहाँ बैठ गया ?

२. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

क) जंगल में कौन कौन रहते थे ?

ख) हिरन क्या खाता था ?

ग) सियार का नाम क्या था ?

घ) हिरन किसमें फँस गया ?

ङ) हिरन का सच्चा मित्र कौन निकला ?

३. लिखिए और पढ़िए :

जैसे- सुबह-शाम

ऊपर-नीचे

सुंदर-

कोमल-

सरस-

खुशी-

फँसना-

अंधेरा-

थामना-

मित्र-

(असुंदर, कठिन, नीरस, गम, खुलना, उजाला, गिराना, शत्रु)

भाषा - कार्य

४. इन शब्दों से वाक्य बनाइए:

सुंदर, मुलायम, खुशी, आफत, ढूँढ़ना, बैठना, मरना, भागना, फौरन, इंतजार

५. इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

आवाज	सफल
फौरन	इंतजार
मुलायाम	मदद
आफत	निशान
मुर्दा	देह

(शोर, नरम, शव, शरीर, कामयाब, तुरंत, प्रतीक्षा, चिह्न, विपदा, सहायता)

६. नीचे दी गई सारणी से शुद्ध वाक्य बनाइए :

मालिक	ने	एक जाल	बिछाया ।
मैं		एक खेत	देखा है ।
मोहन		केला	खाया है ।
		कागज	खरीदा ।
सियार		एक तरकीब	सोची ।
सीता		रोटी	खाई थी ।
गोपाल		एक कहानी	पढ़ी ।
		चिट्ठी	लिखी ।

७. मिलाइए, कौन क्या करता है ?

कोयल	भौंकता है ।
कौआ	दहाड़ता है ।
कुत्ता	म्याऊँ-म्याऊँ करती है ।
शेर	काँव-काँव करता है ।
बिल्ली	रँभाती है ।
हाथी	मिमियाती है ।
गाय	चिंघाड़ता है ।
बकरी	कूकती है ।

आपके लिए काम:

जंगल में रहनेवाले दस जानवरों के नाम लिखिए ।

आप याद करके मित्रों को एक ऐसी घटना का विवरण सुनाइए, जिससें आपमे किसी जरूरतमंद आदमी की सहायता की हो।

हमारे पशु

शिक्षक बच्चों को दूसरे पशुओं से परिचित कराएँ।

हमारे पक्षी

शिक्षक बच्चों को दूसरे पक्षियों से परिचित कराएँ।

रंग कितने

लाल, काला, पीला, नीला, हरा, गुलाबी, भूरा,
सफेद, बैंगनी, नारंगी।

बताओ - किसका रंग कैसा है ?

टमाटर-

केला-

पत्ता

मूँगफली-

करेला-

कोयला- 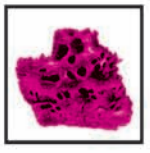

गाजर-

बैंगन-

दूध -

आम-

सेव-

आसमान-

गुलाब-

मटर-

पपीता-

नीबू-

संतरा-

मिर्च

कौन क्या है ?

(सिर्फ पढ़ने के लिए)

जो आलस करता है — आलसी

जो मेहनत करता है — मेहनती

जो खेलता है — खिलाड़ी

जो तैरता है — तैराक

जो नकल करता है — नकलची

जो बहुत खाता है — पेटू

जो खेती करता है — किसान

जो मिट्टी के वर्तन बनाता है — कुम्हार

जो दूध बेचता है — ग्वाला

जो लकड़ी की चीजें बनाता है— बढ़ई

जो बगीचे की देखभाल करता है-—माली

जो चित्र बनाता है — चित्रकार

जो इलाज करता है — डाक्टर

जो मिठाई बनाता है — हलवाई

जो बर्तन बनाता है — ठठेरा

(ऐसे कुछ शब्द बनाइए और लिखिए)

चित्र बनाइए और रंग भरिए

१ से २० तक के बिंदुओं को मिलाइए। चित्र का नाम लिखिए।

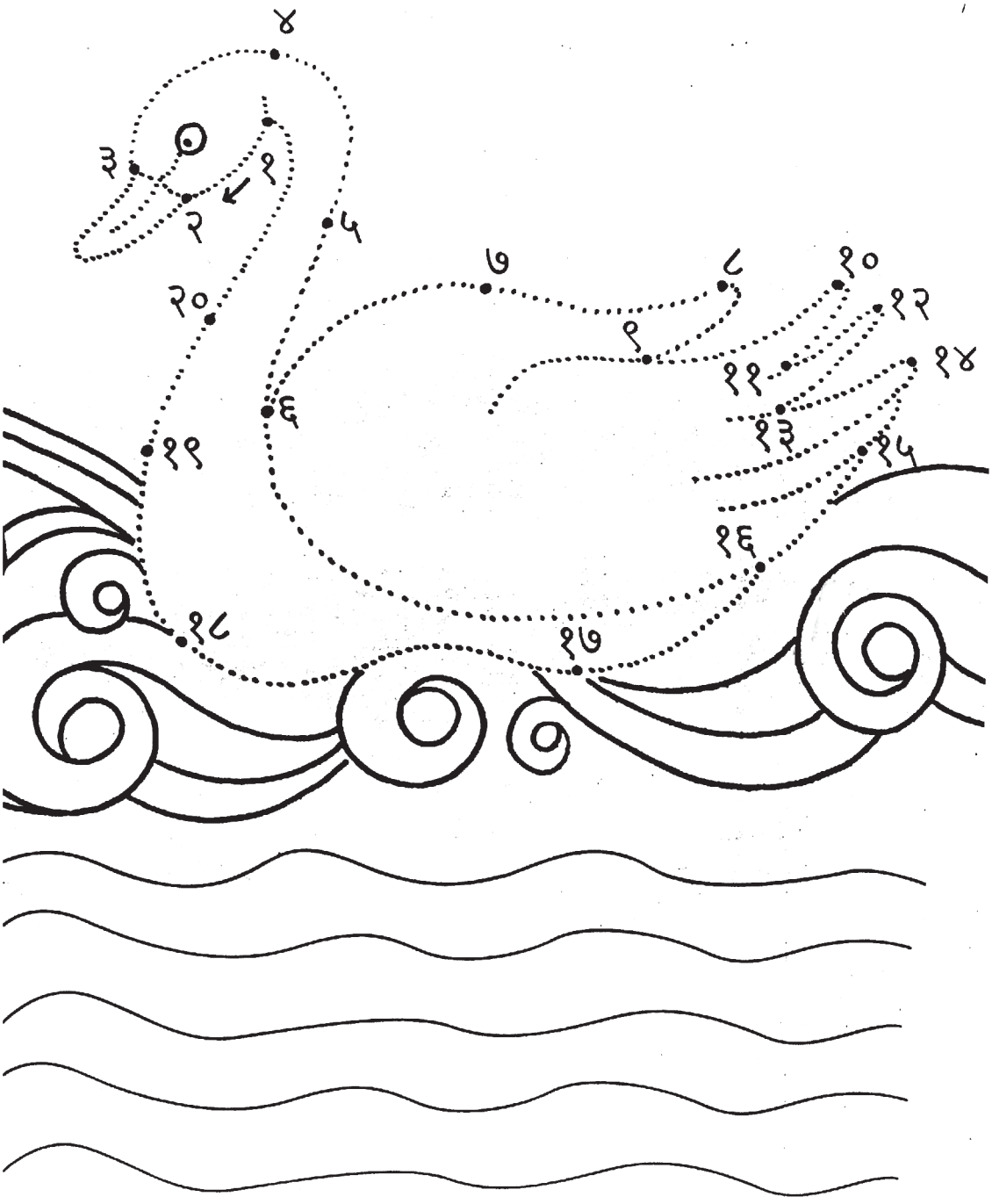

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ए
ऐ	ओ	औ	क
ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ
ञ	ट	ठ	ड
ढ	ण	ड़	ढ़

त	थ	द	ध
न	प	फ	ब
भ	म	य	र
ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र
ज्ञ	श्र	ं	ः
ँ			

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतबासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का, सदा प्रयत्न करते करेंगे। हम अपने माता-पिता, गुरुजन एवं सभी बड़ो का सदा सम्मान करेंगे, और सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।